शब्द-ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2014

भारत एवं दक्षिण एशियाई सहयोग संगठन (दक्षेस) और भारत की भूमिका : एक विश्लेषण

डॉ.शीला ओझा
प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,
शासकीय महाविद्यालय,
नागदा, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

दक्षिण एशियाई सहयोग संगठन भारतीय विदेश नीति के संचालन का प्रमुख क्षेत्र है। यह क्षेत्र भारत की विदेश नीति के प्रभाव क्षेत्र का भी मुख्य आधार है। ऐसे तो दक्षिण एशिया को अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों के परम्परागत विश्लेषक भारतीय उपमहाद्वीप कहकर सम्बोधित करते हैं, किन्तु नवीन विश्लेषक इसे दक्षिण एशिया कहकर भारतीय प्रभावों से मुक्त करने की चेष्टा करते हैं। किन्तु यह सत्य है कि यह क्षेत्र मूलतः भारत के प्रभाव का क्षेत्र है। दक्षिण एशिया पर चर्चा करने से पूर्व दक्षिण एशिया की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र में दक्षेस देशों के साथ में भारत की भूमिका की चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

सार्क के निर्माण से पूर्व विश्लेषक इस क्षेत्र के विश्लेषण में बर्मा और अफगानिस्तान को इसी क्षेत्र में सम्मिलित करते थे। बर्मा के भारत के साथ परम्परागत सम्बन्धों को देखते हुए तथा अफगानिस्तान के ब्रिटिशकालीन भारतीय नीति से जुड़े होने के कारण उसे दक्षिण एशियाई नीति और सुरक्षा परिदृश्य का भी अभिन्न अंग मानते थे। किन्तु अफगानिस्तान के मध्य एशियाई देशों के साथ सम्बन्धों के फलस्वरूप उसे सार्क का अंग नहीं माना गया। वैसे पाकिस्तान की रुचि नहीं थी कि अफगानिस्तान को दक्षिण एशिया का अंग माना जाये। बर्मा को उसके दक्षिण पूर्वी एशिया में बढ़ी हुई भूमिका के कारण दक्षिण एशिया से अलग किया गया और जब दक्षेस का निर्माण 1985 में किया गया तब उसमें भारत, श्रीलंका, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, मालद्वीप और नेपाल सम्मिलित थे।1 आगे चलकर अफगानिस्तान भी दक्षेस का सदस्य हो गया।2 दक्षिण एशिया मूलतः भारत केन्द्रित है। दक्षिण एशिया के सभी देशों की सीमाएँ भारत के साथ लगी हुई हैं और पड़ोसी देशों में हो रही प्रत्येक घटना का प्रभाव भारत पर निरन्तर पड़ता है।3 भारत के विभिन्न प्रान्तों से निकटता के कारण इन देशों में हो रही प्रत्येक घटना का प्रभाव भारत के विभिन्न प्रान्तों में सीधा ही पड़ता है। उदाहरण स्वरूप श्रीलंका में होने वाली घटनाओं का सीधा असर तमिलनाडु की राजनीति पर पड़ता है और ठीक इसी प्रकार बांग्लादेश में होने वाली घटनाएँ पश्चिमी बंगाल की राजनीति को प्रभावित करती हैं। दक्षिण एशियाई देशों से आने वाले शरणार्थियों के कारण भारत के आर्थिक संसाधनों पर लगातार दबाव बना रहता है।

सैन्य संतुलन

दक्षिण एशियाई सीमाओं का निर्माण 1971 में बांग्लादेश के निर्माण के फलस्वरूप बदला है, जिसके परिणामस्वरूप 1947 में जिन सिद्धान्तों के आधार पर यह विभाजन 1971 में एक बार फिर बदला और व्यापक सांस्कृतिक आधारों पर यह बदलाव इसलिये और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया कि इस बदलाव में भारत ने बहुत ही अधिक निर्णायक भूमिका निभायी।4

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2014

दक्षिण एशिया के संदर्भ में यह भी कहा जाना अनुचित नहीं होगा कि इस क्षेत्र का सैन्य संतुलन भारत के पक्ष में बहुत अधिक झुका हुआ है। भारत सामरिक दृष्टि से इस क्षेत्र का सबसे बड़ा देश है। सामरिक दृष्टि से पाकिस्तान भारत के पश्चात् दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा देश है। दक्षिण एशियाई देशों के सैन्य सन्तुलन को बराबर करने में दक्षिण एशिया से बाहर के देश बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनमें अमेरिका की भूमिका का सबसे पहले उल्लेख किया जा सकता है। शीत युद्ध के समय से ही अमेरिका सैन्य संगठनों का सदस्य पाकिस्तान रहा है तथा 1954 के बाद से ही अमेरिकी सैन्य संगठन ने मुख्य सन्तुलक की भूमिका भारत-पाकिस्तान के बीच में निभायी है।5 सन 1980 के दशक में अमेरिकी रुझानों में कुछ बदलावों का आभास होता है किन्तु यह पूरी तरह से पाकिस्तान से अलग रहने का आभास नहीं देता है। दक्षिण एशिया को प्रभावित करने वाला अन्य सन्तुलक चीन है जिसने 1962 के भारत-चीन संघर्ष के पश्चात् पाकिस्तान के पक्ष में अपने निर्णय दिये हैं और दक्षिण एशियाई सन्तुलन के बीच निर्णायक के रूप में प्रभावित करता है। दक्षिण एशियाई सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले देशों में सोवियत संघ प्रमुख देश है।6 सोवियत संघ का रूझान भारत के लिए महत्त्वपूर्ण रहा है और वह काफी सीमा तक अमेरिका एवं चीनी प्रभावों को कम करता है।

व्यापारिक सम्बन्ध

भारत के दक्षिण एशियाई देशों के साथ विवादों को देखते हुए दक्षेस में द्विपक्षीय सम्बन्धों के तनावपूर्ण पक्षों को अलग रखने की बात कही गई है। दक्षिण एशियाई देशों के बीच आर्थिक सहयोग के विकास की संभावनाओं को देखना भी गलत नहीं होगा। 1970 के दशक से 1990 तक के वर्षों के व्यापारिक सम्बन्धों को देखें तो यह स्पष्ट तौर पर उभरकर सामने आता है कि इन समस्याओं में लगातार विकास हो रहा है। यह तथ्य निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है-

दक्षेस के देशों के मध्य आपसी व्यापार का विवरण 1970-1990
(अमेरिकी मिलियन डॉलर में)

	1970		1980		1985		1990	
	द.एशिया	विश्व	द.एशिया	विश्व	द.एशिया	विश्व	द.एशिया	विश्व
बंगलादेश	-	-	165	3357	164	3771	310	5321
भारत	95	4152	448	23450	382	25068	620	41617
मालदीव	-	-	7	36	11	76	19	185
नेपाल	52	133	129	423	147	613	198	896
पकिस्तान	18	1474	289	7969	238	8630	344	12965
श्रीलंका	61	730	06	3119	171	3136	254	4668
कुल	226	6889	1244	38354	1113	41294	1745	65652
प्रतिशत	3.28		3.24		2.70		2.66	

(स्रोत: शीला ओझा, समकालीन भारतीय विदेश नीति, भाग-2, 2005, पृ. 105)

दक्षिण एशियाई क्षेत्र के पिछड़े देशों के समूह के राष्ट्र हैं जिन्हें अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों के व्याख्याकार 'विकासशील दक्षिण' कहकर सम्बोधित करते हैं। ये देश जनसंख्या की दृष्टि से अधिक जनसंख्या वाले देश हैं और विभिन्न स्वास्थ्य सुविधाओं की दृष्टि से पिछड़े हुए तथा तकनीकी दृष्टि से भी इस क्षेत्र का अधिक विकास नहीं हुआ है। दक्षिण एशियाई देशों की

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2014

जानकारी से सम्बन्धित इस तालिका में यह तथ्य बहुत ही स्पष्ट उभरकर सामने आता है। इस तालिका के अनुसार-

देश	जनसंख्या मिलियन में	क्षेत्रफल	सकल राष्ट्रीय उत्पाद प्रतिव्यक्ति की दर	वयस्क साक्षरता प्रतिशत में
भारत	913.9	3288	320	34
बंगलादेश	117.9	114	220	48
नेपाल	20.9	141	200	73
पाकिस्तान	126.3	796	430	62
श्रीलंका	17.2	66	640	10
मालद्वीप	0.178	298		
भूटान	12.4 (1987)	47000		

(स्रोत: शीला ओझा, समकालीन भारतीय विदेश नीति, भाग-2, 2005, पृ. 106

दक्षेस की स्थापना

दक्षिण के पारस्परिक सहयोग से ही दक्षेस की स्थापना महत्त्वपूर्ण है। वैसे दक्षेस की उत्पत्ति बांग्लादेश के राष्ट्रपति जिया उर रहमान के 1977 के उस प्रस्ताव से मानी जा सकती है जिसे उन्होंने मई, 1980 में पुनः इस ओर ध्यान दिलाते हुए कहा कि इस क्षेत्र के आर्थिक सहयोग हेतु सभी देशों के राजनेताओं का एक सम्मेलन बुलाया जाए। हालांकि इस प्रस्ताव को संदेह की नजर से देखा गया परन्तु धीरे-धीरे इसे व्यावहारिक रूप में मान लिया गया। बहुत विचार-विमर्श के बाद नवम्बर, 1980 में एक कार्यपत्र तैयार किया गया जिसे कोलम्बो में होने वाले पहले आधिकारिक सम्मेलन में अप्रैल, 1981 में रखा गया। यही कार्यपत्र इस सम्मेलन की गतिविधियों एवं वार्ताओं का मुख्य आधार बना। इनके बाद इस संगठन के विभिन्न नियमों, प्रक्रियाओं संरचनाओं एवं कार्यक्षेत्रों के बारे में निर्णय लिए गए। साथ ही निश्चित किया गया कि इस संगठन के निर्णय आम सहमति से लिये जायेंगे तथा प्रत्येक देश को इसमें वीटो करने का अधिकार होगा। एक स्थायी समिति बनाकर उसे समन्वय का कार्य सौंपा गया तथा एक कार्यदल बनाया जिसने आपसी सहयोग क्षेत्रों का पता लगाया जिसमें प्रारम्भिक क्षेत्र के रूप में कृषि, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य एवं जनसंख्या, दूर संचार तथा मौसम विभाग सम्मिलित थे लेकिन बाद में यातायात, डाक सेवाएँ, विज्ञान व प्रौद्योगिकी, खेलकूद तथा कला व संस्कृति के क्षेत्रों को भी सम्मिलित कर लिया गया। इन्हीं सहयोगों के आधार पर विदेश मंत्रियों के अगस्त, 1983 के सम्मेलन में दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग की स्थापना की गई जिसे ढाका में 1985 में सम्पन्न हुए सात देशों के राजनेताओं के शिखर सम्मेलन में दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग का नाम दिया गया।7

1985 में प्रथम ढाका शिखर सम्मेलन में दक्षेस के 10 सूत्रीय चार्टर पर सात देशों को प्रमुख ने हस्ताक्षर किये।8 चार्टर के प्रमुख उद्देश्य अनुच्छेद-1 में स्पष्ट किए गए-

1.दक्षिण एशिया के जनकल्याण व जीवनस्तर में सुधार करना।
2.आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास द्वारा व्यक्ति को सम्मान के साथ जीने के अवसर प्रदान करना,
3.दक्षिण एशियाई राष्ट्रों में परस्पर आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना,
4.आपसी समस्याओं पर विश्वास, सूझबूझ के साथ समर्थन करना,
5.आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी एवं वैज्ञानिक क्षेत्रों में सक्रिय सहयोग तथा परस्पर सहायता करना,
6.दूसरे विकासशील देशों के साथ सहयोग बढ़ाना,
7.समान हित के विषयों पर अन्तरराष्ट्रीय मंचों पर सहयोग बढ़ाना, एवं
8.समान उद्देश्यों वाले अन्तरराष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संगठनों के साथ सहयोग बढ़ाना।9

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इन सात राष्ट्रों ने समान प्रभुसत्ता, क्षेत्रीय अखण्डता, राजनैतिक स्वतंत्रता, आंतरिक कार्यों में अहस्तक्षेप एवं परस्पर लाभ (अनुच्छेद-2) के सिद्धान्त पर संगठित होना स्वीकार किया। साथ ही यह सहमति व्यक्त की गई कि प्रक्रिया द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय सहयोग का न तो विकल्प होगा तथा न ही उनके मार्ग में अड़चने पैदा करेगी, अपितु यह उन सहयोगों को और आगे बढ़ायेगी।10

इस तरह दक्षेस के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए वर्ष में एक बार सभी दक्षेस राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्ष शिखर सम्मेलन के रूप में मिलेंगे तथा विदेश मंत्री स्तर पर वर्ष में दो बार मिलेंगे। इसके अलावा तीन प्रमुख समितियों का गठन किया गया - स्थायी समिति, तकनीकी समिति एवं कार्य समिति। ये समितियां दक्षेस की नीतियों को लागू करने, कार्यक्रमों का समन्वय तथा नियंत्रण, संचालन एवं विशेष क्षेत्र के कार्यों को लागू करने का पूर्ण उत्तरदायित्व संभालेगी। अनुच्छेद-1 द्वारा यह स्पष्ट किया गया कि इसमें सभी फैसले एकमत से लिये जायेंगे तथा द्विपक्षीय एवं विवादपूर्ण मुद्दों को इसकी वार्ताओं में सम्मिलित नहीं किया जायेगा।

1987 में (अनुच्छेद-8 के आधार पर) काठमांडू में एक सचिवालय की स्थापना की गई। इस तरह दक्षेस की गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाते हुए 1985 से 1990 तक पांच शिखर सम्मेलन आयोजित हो चुके हैं, जिसमें क्रमशः पहला शिखर सम्मेलन 1985 ढाका में, दूसरा 1986 में बैंगलोर, 1987 में तीसरा शिखर सम्मेलन, चौथा 1988 में इस्लामाबाद तथा 1990 में पांचवां शिखर सम्मेलन माले में आयोजित किया गया। छठा सम्मेलन कोलम्बो (1991), सातवाँ ढाका (1993), आठवाँ नई दिल्ली (1995), नवाँ माले (1997), दसवां कोलम्बो (1998), ग्यारहवां काठमांडू (2002), बारहवां इस्लामाबाद (2004), तेरहवां ढाका (2005), चौदहवां नई दिल्ली (2007), पन्द्रहवां कोलम्बो (2008)। वैसे दक्षेस के सम्मेलन निरन्तर होते रहे हैं।11

दक्षेस की मुख्य समस्या सदस्य देशों के द्विपक्षीय सम्बन्ध ही रहे हैं जिसमें उनके परस्पर तनाव इस संगठन की आर्थिक गतिविधियों के संचालन के लिये बाधा है। अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों में जबकि विभिन्न क्षेत्रीय समूहों का विकास हो रहा है तब दक्षेस की आवश्यकता अधिक है। इस मंच में विकास के लिये भारत की अपनी प्राथमिकताएँ भी सीमित हैं एवं भारत आर्थिक राजनय के लिये इस मंच की आवश्यकता को अभी पूरी तरह से उपयोग नहीं कर पाया है। इस मंच को आर्थिक क्षेत्र में परस्पर सहयोग के माध्यम से विकास की अधिक आवश्यकता है।

ऐतिहासिक समझौते

पहला- दक्षिण एशिया को मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाने (साफ्टा) की संधि।

दूसरा - आतंकवाद के विरुद्ध संधि पर अतिरिक्त प्रोटोकाल।

इस सम्मेलन की समाप्ति पर भारतीय प्रधानमंत्री वाजपेयी और पाक प्रधानमंत्री जमाली तथा अन्य नेताओं ने इस्लामाबाद घोषणा-पत्र जारी किया। इस्लामाबाद घोषणा-पत्र में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक रहा है आतंकवाद का प्रश्न जिसे सभी देशों ने स्वीकारते हुए कहा कि, "हम आतंकवादी हिंसा की हर रूप में निन्दा करते हैं तथा संज्ञान लेते हैं कि दक्षिण एशिया के लोग अब भी आतंकवाद के गंभीर खतरे झेल रहे हैं।"

यह पहली बार हुआ कि सार्क के एजेन्डे में अतिरिक्त प्रोटोकाल के तहत आतंकवाद के मुद्दे को शामिल किया गया और सात देशों के शासनाध्यक्षों ने यह निश्चित किया कि वे एक साथ मिलकर आतंकवाद से निपटेंगे और आतंकवादी समूहों को मिलने वाली मदद से निपटने के प्रभावी उपाय खोजेंगे। भारत का दबाव हमेशा इस बात पर रहा है कि उसका पड़ोसी आतंकवादी संगठनों की मदद करता है। लेकिन इस सम्मेलन में पाकिस्तान ने भी आतंकवाद पर भारत की चिंता से सहमति जताई है। इस्लामाबाद घोषणा-पत्र की सबसे बड़ी विशेषता रही है शांति की कोशिशों में सबको शामिल करने की सोच। इसमें स्पष्ट रूप से यह कहा गया है कि शांति की तलाश में सब साथ चलेंगे, सभी की समान भागीदारी होगी, विकास व समृद्धि के इस कार्य में सभी लोग भागीदार होंगे। दक्षिण एशिया में मुक्त व्यापार के लिए संधि को सार्क एजेण्डे में स्वीकृत किया गया। अगर पाकिस्तान भारत को 'मोस्ट फेवर्ड नेशन' का स्थान नहीं भी दे तो साफ्टा के बाद अपने आप प्राथमिकताएं तय हो जायेंगी। 43 सूत्री इस्लामाबाद घोषणा-पत्र में सभी पड़ोसियों ने यह भी तय किया है कि वे अपने आपसी विवादों को निपटाने के लिए शांतिपूर्ण साधनों और संवाद का उपयोग करेंगे। सभी देश आपसी मामलों के निपटाने के लिये अनौपचारिक राजनीतिक वार्ता करते रहेंगे और एक-दूसरे के मामले में अहस्तक्षेप की नीति अपनायेंगे। छोटे देशों की सुरक्षा को भी विशेष महत्त्व दिया गया है। कई तरह के संदेहों, अविश्वास और असुरक्षा के वातावरण में प्रारम्भ हुए सार्क सम्मेलन की समाप्ति एवं ऐतिहासिक घोषणा पत्र के बाद संयुक्त बयान जारी किया गया।

आगरा में भारतीय प्रधानमंत्री वाजपेयी और पाक जनरल मुशर्रफ की 2001 में विफल वार्ता के बाद द्विपक्षीय बातचीत मुश्किल में पड़ गयी थी। लेकिन इस सम्मेलन में वाजपेयी-मुशर्रफ के परस्पर मिलने पर फिर बातचीत प्रारम्भ हुई।

संयुक्त बयान

पाक राष्ट्रपति जनरल मुशर्रफ ने प्रधानमंत्री वाजपेयी को पुनः आश्वस्त किया कि पाकिस्तान अपने नियंत्रण वाली जमीन से आतंकवाद का किसी भी तरह से समर्थन करने की इजाजत नहीं देगा। दोनों देश बात पर सहमत हुए कि व्यापक बातचीत की प्रक्रिया शुरु की जाए। दोनों शासनप्रमुखों ने दोनों देशों के बीच सम्बन्धों को सामान्य बनाने की दिशा में की गई पहल पर सहमति जताई, व आशा व्यक्त की कि विश्वास बढ़ाने के प्रयासों को और मजबूत किया जायेगा। प्रधानमंत्री वाजपेयी ने कहा कि बातचीत की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिये हिंसा, वैमनस्य और आतंकवाद को समाप्त किया जाना चाहिए। वहीं राष्ट्रपति मुशर्रफ ने वाजपेयी को पुनः आश्वस्त किया कि पाकिस्तान के नियंत्रण वाली जमीन से समर्थन देने वाली कोई भी कार्यवाही नहीं होने दी जायेगी। मुशर्रफ ने जोर दिया कि सभी विषयों को लेकर की गई बातचीत से सकारात्मक परिणाम निकलेंगे। सम्बन्धों को सामान्य बनाने की प्रक्रिया को आगे भी जारी रखने के लिये दोनों नेताओं ने व्यापक बातचीत की प्रक्रिया प्रारम्भ करने की सहमति के साथ-साथ यह विश्वास जताया कि समग्र बातचीत फिर से प्रारम्भ होने से सभी द्विपक्षीय मुद्दों का

शान्तिपूर्ण समाधान निकल आयेगा। इसमें जम्मू कश्मीर का मामला भी है। उसका भी समाधान खोजा सकता है जो दोनों ही पक्षों को स्वीकार हो। वाजपेयी और मुशर्रफ इस बात पर भी सहमत थे कि रचनात्मक बातचीत दोनों ही देशों के लोगों और आने वाली पीढ़ी के लिये शांति, सुरक्षा और आर्थिक विकास के समान उद्देश्यों को पाने में सहायक होगी।12

उपर्युक्त बयान भारत तथा पाकिस्तान के बीच 4 से 6 जनवरी, 2004 तक हुए दक्षेस सम्मेलन जिसे अनपेक्षित शिखर वार्ता कहा गया के बाद जारी किया गया। हालांकि प्रधानमंत्री वाजपेयी और जनरल मुशर्रफ के बीच द्विपक्षीय चर्चा का कार्यक्रम नहीं था, लेकिन जब वह वार्ता हुई जो पूरी तरह संयुक्त न होते हुए भी महत्त्वपूर्ण कही जा सकती है क्योंकि दोनों देशों के विवादों पर चर्चा होना व उस पर परस्पर सहमति जताना इस संयुक्त बयान को महत्त्वपूर्ण बनाता है। चीन भी दक्षेस राष्ट्रों के साथ जुड़ना चाहता है। यह बात स्पष्ट हो जाती है चीन के प्रधानमंत्री श्री वेन जियाबाओ के विशेष संदेश जो कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री मीर जफरूल्ला खान जमाली को दक्षेस की 12वीं शिखर बैठक की सफलता के लिये था, इसमें कहा गया कि- "चीन शांति और विकास के लिये दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ के साथ काम करना चाहता है।" क्षेत्र में शांति के लिये इससे बड़ा संकेत और क्या हो सकता है।

सम्मेलन में जारी संयुक्त बयान में इस सहमति का जिक्र किया गया कि विस्तृत बातचीत की प्रक्रिया पुनः प्रारम्भ की जाए। अगर ऐसा होता है तो दो-तीन वर्षों से रूकी हुई चर्चा का फिर से प्रारम्भ होना समाधान की दिशा में एक बड़ा कदम होगा। ऐसी सहमति आमतौर पर औपचारिक और पूर्व निर्धारित एजेण्डे से मिलने पर होती है। संयुक्त बयान की दूसरी महत्त्वपूर्ण बात रही है कि पाकिस्तान के नियंत्रण वाले किसी भी क्षेत्र का उपयोग किसी भी तरह से आतंकवाद की समर्थक गतिविधियों के लिये नहीं होने दिया जाएगा। वैसे मुशर्रफ ने पाक अधीनस्थ कश्मीर का अलग से उल्लेख इस संदर्भ में नहीं किया है फिर भी भारतीय पक्ष तो इस क्षेत्र को भी मुशर्रफ के बयान में शामिल मानेगा। अगर ऐसा होता है तो भारत की प्रमुख मांग पूरी हो जायेगी कि पाक अधीनस्थ कश्मीर में आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों को बन्द किया जाये, लेकिन इसका कार्यरूप में होना आवश्यक है।

संयुक्त बयान में जम्मू कश्मीर समस्या का उल्लेख किया गया है जबकि दक्षेस मंच से पाकिस्तान ने यह उल्लेख नहीं कर भारत के साथ अच्छे सम्बन्धों की आवश्यकता का परोक्ष समर्थन किया। हालांकि यह उल्लेख दोनों देशों की आपसी सहमति से किया गया है। अतः यह माना जा सकता है कि इस तरह पाकिस्तान ने कश्मीर मुद्दे को द्विपक्षीय सम्बन्धों के दायरे में स्वीकार कर लिया है और उसे अन्तरराष्ट्रीय मुद्दा बनाने की नीति पर पुनर्विचार के संकेत दिए हैं। इसलिये यह कहना कि परिणाम क्या होंगे लेकिन यह तो हम कह ही सकते हैं कि भारत तथा पाकिस्तान के बीच दूरियां कम हुई हैं।

अंततः यही कहेंगे कि दक्षिण एशिया में स्थायी शांति के लिये सार्क से बेहतर कोई स्थान नहीं हो सकता है। भारतीय प्रधानमंत्री वाजपेयी ने इस मंच का भरपूर उपयोग किया जिसमें पाक प्रधानमंत्री जमाली और सार्क के दूसरे सदस्य देशों ने उनको सहयोग दिया। 18 वर्ष पहले 1985 में दक्षिण एशिया में शांति और सहयोग बढ़ाने के लिये सार्क की स्थापना हुई थी। कई कारणों से छह बार इसकी बैठक नहीं हो पायी, लेकिन 12वें सम्मेलन से पूर्व कभी भी दक्षेस बैठक इतनी अच्छी नहीं रही थी इसे ऐतिहासिक बैठक कहा गया। इस्लामाबाद में दक्षेस का पहला सम्मेलन हुआ, जिस पर भारत-पाकिस्तान के दो पक्षीय विवाद का प्रतिबिम्ब नहीं दिखा। इससे पहले हर सम्मेलन दोनों देशों के बीच चल रहे

तनाव, बढ़ती कटुता और शांति युद्ध की स्थिति में प्रारम्भ होता था। मेजबान देश के प्रधानमंत्री जमाली ने अपने प्रारम्भिक भाषण में जिन मुद्दों को उठाया, बाद में सभी सदस्य देशों ने उनको आगे बढ़ाया। वाजपेयी ने अपने भाषण में गरीबी खत्म करने के लिए टास्क फोर्स और एक फण्ड बनाने का सुझाव दिया, एक-दूसरे पर शक की बजाय भरोसा किया जाए और छोटे-छोटे राजनीतिक मतभेदों में उलझने के स्थान पर विकास की दिशा में आगे बढ़ा जाए। सीधे-सीधे आतंकवाद का मुद्दा न उठाते हुए भूटान के उदाहरण के साथ आतंकवाद से निपटने में पड़ौसी देशों की भूमिका को रेखांकित किया। न ही सीधे से कश्मीर का मामला उठाया वरन् आतंकवाद की समाप्ति के साथ ही समस्याओं का समाधान करना चाहा।

निष्कर्षतः यही कहेंगे कि उस सम्मेलन से कुछ महत्त्वपूर्ण और सकारात्मक परिणाम दिखाई दिए। पहला तो यही है कि पाकिस्तान ने कश्मीर को द्विपक्षीय मामला मान लिया है। दूसरा यह कि भारत के विदेश मंत्री की यह पेशकश कि अभी जो संघर्ष विराम चल रहा है, उसे अन्तरराष्ट्रीय सीमा, नियंत्रण रेखा और सियाचिन की अधिकार रेखा तक स्थायी युद्ध विराम बना दिया जाए। तीसरी महत्त्वपूर्ण बात रही है कि दक्षेस देशों ने मुक्त साझा व्यापार (साफ्टा) को मंजूरी दे दी है। दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (दक्षेस) का 13वां शिखर सम्मेलनः 12-13 नवम्बर, 2005

बांग्लादेश की राजधानी ढाका में दक्षिण एशियाई क्षेत्र को गरीबी, भूखमरी और बीमारी से छूटकारा दिलाने, तेजी से फैल रहे आतंकवाद से निपटने तथा आर्थिक एकीकरण को गति प्रदान करने की प्रतिबद्धता के साथ दक्षेस का 13वां शिखर सम्मेलन 12 नवम्बर, 2005 में हुआ।

इस सम्मेलन के उद्घाटन में भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह सहित दक्षेस देशों से शासनाध्यक्षों ने आतंकवाद से निपटने के संयक्त प्रयास और आर्थिक एकीकरण को क्षेत्र के विकास और समृद्धि के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बताते हुए इसके एकजुट प्रयास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। साथ ही प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने यह अपील की कि वह किसी भी सूरत में अपनी जमीन का उपयोग एक-दूसरे के विरुद्ध आतंकियों और अपराधी तत्त्वों को शरण देने के लिए नहीं करे और न ही सीमा पार घुसपैठ को किसी कीमत पर सहन करें। उन्होंने यह भी कहा कि परस्पर विश्वास बनाये रखने और सामूहिक प्रतिबद्धता के वातावरण में ही दक्षेस अपना निर्धारित लक्ष्य प्राप्त कर पाएगा।13

श्रीलंका की राष्ट्रपति चंद्रिका कुमारतुंग ने सदस्य देशों के आर्थिक एकीकरण की दिशा में तेजी से कदम बढ़ाने का प्रस्ताव रखा। नेपाल नरेश ज्ञानेन्द्र ने कहा कि आतंकवाद अंतरराष्ट्रीय शांति, स्थायित्व, सुरक्षा और लोकतंत्र के लिए बड़ा खतरा बनकर उभरा है। मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद अब्दुल गयूम ने आतंकवाद के खिलाफ अतिरिक्त प्रोटोकॉल को तुरन्त अनुमोदित करने की अपील की।

विशेष रूप से पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शौकत अजीज ने कहा कि भारत के साथ राजनीतिक रिश्ते बेहतर होने से माहौल में सुधार हुआ है और कश्मीर तथा अन्य मुद्दों पर समाधान के लिए शांति प्रक्रिया जारी है जो दक्षिण एशिया और सार्क सम्मेलन के लिए अनुकूल है। साथ ही यह भी कहा कि इस प्राचीन उप महाद्वीप में हम नई उम्मीद देख रहे हैं।

13 नवम्बर, 2005 को आतंकवाद के सम्पूर्ण उन्मूलन और आर्थिक विकास के लिए एक-दूसरे का सहयोग करने के संकल्प के साथ ढाका में 13वां दक्षेस सम्मेलन का समापन हो गया। जिसमें दोहरे कराधान की व्यवस्था को समाप्त करने, बीजा प्रावधानों को उदार बनाने तथा सापटा पंचाट परिषद् गठित करने के संबंध में तीन महत्त्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए।

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने समापन पर सदस्य राष्ट्रों को संबोधित करते हुए बैठक में कहा कि वे दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र के संदर्भ में आपसी मतभेदों को सुलझाने में तत्परता दिखाए ताकि आने वाली 1 जनवरी से इसे लागू किया जा सके। सार्क के अगले शिखर सम्मेलन के मेजबान और अध्यक्ष की हैसियत से भारतीय प्रधानमंत्री ने सदस्य राष्ट्रों से कहा कि हमें उन लंबित मुद्दों का हल निकालने की कोशिश करना चाहिए जिनके कारण हम साफ्टा पर अंतिम करार नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने इस बात पर संतोष जताया कि ढाका सम्मेलन में एक विचार विमर्श से क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाने की दिशा में ठोस प्रगति हुई है। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने नेपाल नरेश से अपनी चर्चा के दौरान कहा कि नेपाल में शीघ्र ही बहुदलीय लोकतांत्रिक व्यवस्था पुनः लागू कर देना चाहिए।

भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के द्वारा दिया गया प्रस्ताव कि दक्षिण एशियाई देशों को तीसरे देश में जाने के लिए एक-दूसरे को पारागमन की सुविधाएं उपलब्ध कराना चाहिए, पर पाक प्रधानमंत्री शौकत अजीज ने कहा कि कश्मीर मसले का समाधान होने तक यह सुविधा नहीं दी जा सकती।

ढाका में हुए 13वें दक्षेस सम्मेलन के उपरोक्त विश्लेषण से यह लगा कि दक्षेस का विस्तार हो रहा है क्योंकि अब दक्षेस में सात के स्थान पर आठ सदस्य हो गये हैं। इसमें अफगानिस्तान इसका आठवाँ सदस्य बन गया है। साथ ही चीन और जापान भी इस मंच से जुड़ने की इच्छा जाहिर कर रहे हैं। इससे यह महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि जिस क्षेत्रीय संगठन को सबसे निष्प्रभावी बनाया जाता रहा है, वह अपने 20वें वर्ष में विस्तार के रूप में दिखाई देने लगा है। अब तक कई विफलताओं के बावजूद इसकी सबसे बड़ी सफलता रही अनेक उतार-चढ़ाव के बीच अपने अस्तित्व को बनाए रखना। यही बात आज दक्षेस को भविष्य का बड़ा आर्थिक क्षेत्र बनाने की राह बनाती दिखाई दे रही है।

भारत और पाकिस्तान भी इस सम्मेलन में कम से कम एक प्रस्ताव पर साथ-साथ दिखाई दिए, चाहे यह मुद्दा अफगानिस्तान की सदस्यता का ही रहा हो। हमें यह ध्यान रखना होगा कि अफगानिस्तान पर सहमति इसलिए नहीं बनी कि सब देश अफगानिस्तान को ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक रूप से दक्षिण एशिया से जुड़ा हुआ मानते हैं, बल्कि इसके पीछे सबके अपने हित हैं। अगर ऐसा नहीं होता तो अफगानिस्तान के प्रस्ताव के आते ही नेपाल-चीन की पूर्ण सदस्यता की बात क्यों रखता ? चीन को भौगोलिक रूप से दक्षिण एशिया का नहीं माना जा सकता। पाकिस्तान ने भी चीन के आने का समर्थन किया। दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार क्षेत्र को 1 जनवरी, 2006 से अस्तित्व में लाने के भारत के सुझाव को पाकिस्तान ने कश्मीर से जोड़ दिया कि जब तक कश्मीर समस्या को सुलझाने की दिशा में सफलता नहीं मिलती पाकिस्तान भारत के साथ मुक्त व्यापार की व्यवस्था लागू नहीं कर सकता। बांग्लादेश का व्यवहार भी सकारात्मक नहीं कहा जा सकता। कारण हो सकता है कि इन देशों को लगता है कि मुक्त व्यापार की व्यवस्था से लाभ केवल भारत को ही होगा। इसीलिए तो जब भी आपसी विवाद खत्म करने की बात होती है तो सभी सदस्य देशों में यही बात उठती है कि विवाद समाप्त करने का मतलब है कि भारत की इच्छानुसार चला जाए।

फिर सभी देशों के अपने आंतरिक राजनीतिक समीकरण होते हैं जिनकी वजह से कोई भी प्रस्ताव सीधे तौर पर स्वीकार नहीं हो पाते हैं और यदि हो भी जाता है तो वह कभी सम्मेलन की कार्यवाही के प्रस्ताव से बाहर वास्तविकता में परिवर्तित नहीं हो पाते हैं। ऐसी स्थिति में अफगानिस्तान की सदस्यता के भारतीय प्रस्ताव पर पाकिस्तान की सहमति नई शुरुआत के

ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2014

संकेत देती हुई लग सकती है, लेकिन क्या वास्तव में यह ईमानदार सहमति है भी ? शायद नहीं, अफगानिस्तान के बहाने पाकिस्तान चीन पर सहमति दे रहा है, लेकिन भारत ने चीन के मसले पर विरोधी दृष्टिकोण न अपनाकर अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया है।

निष्कर्ष

भारत दक्षेस का सबसे बड़ा देश ही नहीं वरन् सबसे अधिक प्रभावी देश है, जिसकी भूमिका इस क्षेत्रीय संगठन की प्रभावशीलता को बढ़ायेगी। यह महत्त्वपूर्ण है कि इस संगठन ने अपने कार्यक्षेत्र को सहयोगात्मक दिशा में ही विकसित करने का निर्णय लिया और यह प्रयास किया कि आर्थिक और अन्य क्षेत्र में परस्पर सहयोग लगातार बढ़े, किन्तु सदस्य राष्ट्रों के आपसी सम्बन्धों के तनाव इस संगठन की कार्य प्रणाली को भी प्रभावित करते हैं और इसी का सामना दक्षेस को लगातार करना पड़ता है, जो इसकी भूमिका को सीमित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1.राबिन ब्लेक बर्न, 'एक्स पोलोजन इन ए सब कान्टिनेंट', पेन गुयिन बुक्स, 1972, पृ. 348
2.एस.पी. वर्मा, साऊथ एशिया एज. ए. रीजन (आलेख) पोलिटिक्ल साइंस रिव्यू, जिल्द 4, अंक 2, 1965, पृ. 1
3.एस. डी. मुनि, 'इंडिया एण्ड रीजनललिज्म इन साऊथ एशिया' (आलेख), बिमल प्रसाद द्वारा सम्पादित पुस्तक इंडियाज फारेन पालिसी स्टडीज इन कान्टूयूनिटी एण्ड चेंज, 1979, पृ. 107-108
4.शिशिर गुप्ता, दी न्यू स्टेट्स सिस्टम इन दी रीजन (आलेख) देवीदत्त सम्पादित पुस्तक, 'दी हिमालियन सब कोनटिनेन्ट: इमिरजिंग पेटर्नस, 1972, पृ. 1-2
5.नरेन्द्र सिंह, दी पाकिस्तान बम (आलेख) टाइम्स आफ इंडिया, 5 जनवरी, 1986
6.एशियन रेकार्डर, 17-23 सितम्बर, 1985
7.दक्षेस की उत्पत्ति के संदर्भ में, साऊथ एशियन रीजनल कारपोरेशन, थर्ड वर्ल्ड क्वाटरली, जिल्द 5, मई-जून, 1984, फारेन अफेयर्स रिपोटर्स, जिल्द 31, अंक 12, दिसम्बर 1982
8.सतीश कुमार (सम्पादक) इयेर बुक आन इंडियाज फारेन पालिसी, 1985-86, नई दिल्ली, 1989, पृ. 264-268
9.वही, पृ. 265
10.वही, पृ. 265-266
11.डॉ.शीला ओझा, शीतयुद्धोत्तर विश्व और भारतीय विदेश नीति, प्रिन्ट वेल, 2009, पृ. 190
12.वही, पृ. 193
13.टाइम्स आफ इंडिया, 14 नवम्बर, 20